Unit - III

पाठ्यक्रम निर्धारक एवं विचार

(Curriculum Determinants and Consideration)

1- सामाजिक, राजनीतिक व आर्थिक विभिन्नता :-

पाठ्यचर्या शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को सफल बनाने का महत्वपूर्ण आधार है अतः आवश्यक है कि पाठ्यक्रम निर्माण सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक आधार पर हो। जहाँ तक शिक्षा का सम्बन्ध है तो उसका प्रमुख लक्ष्य ही बालक का समाजीकरण करना है। इससे स्पष्ट है कि पाठ्यचर्या का निर्माण सामाजिक पृष्ठभूमि और आकांक्षाओं के बीच होना चाहिए।

"पाठ्यचर्या वह साधन है जिसके माध्यम से विद्यालय सामाजिक लक्ष्यों तक पहुचने का प्रयास करते हैं।"

शिक्षा का सामान्य उद्देश्य बालक के व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन लाना है। अतः पाठ्यचर्या वहाँ एक ओर व्यक्ति से सम्बन्धित होती है वहीं दूसरी ओर समाज से।

Scanned with CamScanner

अतः शिक्षा के सामाजिक सन्दर्भ में पाठ्यचर्या के सम्बन्ध में एक बात विचारणीय है कि शिक्षा व्यवस्था उस समाज से अलग नहीं है उसकी निरंतरता वह एक मार्ग है।

राजनीतिक विभिन्नता
(Political Diversity)

जहाँ तक राजनैतिक आधार पर पाठ्यचर्या के अन्दर निहित विषयों के निर्धारण का प्रश्न है तो लोकतांत्रिक राजनीतिक व्यवस्था को अपनाया गया है आज के युग में लोकतन्त्र समाज की पहली आवश्यकता है शिक्षा में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है। इसी प्रकार पाठ्यचर्या के राजनीति आधारित होने पर इसमें मानवीय सम्बन्धों पर सामंजस्य पर बल दिया जाये।

पाठ्यचर्या द्वारा बालकों को केवल इतिहास का ज्ञान प्रदान किया जाये बल्कि वर्तमान व भविष्य की समस्याओं को हल करने में सक्षम बनाया जाये।

Scanned with CamScanner

यदि हम आर्थिक विभिन्नता पर ध्यान दें तो भी पाठ्यचर्या राष्ट्रीय आर्थिक विकास को शिक्षा के द्वारा प्रोत्साहित करने वाली होनी चाहिए। पाठ्य क्रियाओं के आधार पर हाल यह समझा जाते हैं कि राष्ट्रीय विकास क्या है। अतः पाठ्यचर्या में राष्ट्रीय आर्थिक विकास को बढ़ाने वाली अतिविधियाँ शामिल होनी चाहिए।

मूल्यों, आदर्शों का स्थान

विभिन्न समाज की आकांक्षाएं अलग-2 होती है। शिक्षा के उद्देश्य भी देश, काल एवं परिस्थिति के अनुसार बदलते रहते हैं। इन उद्देश्य निर्धारण में व्यक्ति व समाज के मूल्यों, आदर्शों विश्वासों, मान्यताओं एवं परम्पराओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इस प्रकार पाठ्यचर्या निर्माण में कुछ उच्च सम्प्रत्ययों की आवश्यकता होती है। व्यक्ति को सामाजिक विरासत से जो कुछ प्राप्त होता है वह संस्कृति है जो मूल्यों को संवर्धित करती है।

Scanned with CamScanner